कल्याण कलिका भाग-१ (फोल्डर नं. ००१७२२)

मुख्य टाईटल
आभार प्रदर्शन
स्मरणांजली
प्रस्तावना ---------- १-४
प्रस्तावनानो उपोद्घात ---------- ५-४०
विषयानुक्रम
समंगल ग्रन्थोपोदघात ---------- १
प्रथम खंड परिच्छेदसूची ---------- ३
१. भूमिलक्षण- शुभाशुभभूमि ---------- ४
भूमिनी विशेष परीक्षा ---------- ५
२. शल्योद्धार लक्षण ---------- ९
चेष्टा- पशुपद- शब्द- प्रश्नवर्ण लग्नथी शल्यज्ञान ---------- ९
भूमिगत शल्य फल ---------- २०
३.दिक्साधन लक्षण ---------- २१
पांच प्रकारे पूर्वदिशाज्ञान ---------- २२
प्रकारान्तरे दिशाज्ञान ---------- २३
४. कूलिकासूत्र लक्षण ---------- २४
वर्ण परक कीलिका निरुपण ---------- २५
वर्णपरक सूत्रनुं निरुपण ---------- २६
५. कूर्मशिला लक्षण ---------- २६
कूर्मशिलामान ---------- २७
पाषण तथा ईष्टका शिलामां विशेषता ---------- २७
प्रकारान्तरे शिलामान ---------- २७
कूर्मनुं स्वरुप अने मान ---------- २९
कूर्मशिला लक्षण- दाक्षिणात्यपद्धति ---------- ३०
कलश, कमल कूर्म अने योगनालनुं मान ---------- ३२
आधारशिला उपर कलश आदिनो स्थापनाक्रम ---------- ३२
कूर्म प्रमाण ---------- ३४
६. शिला लक्षण ---------- ३५
शिलोआनी संख्या ---------- ३५
शिलाओनुं स्वरुप ---------- ३६
शिलानी लंबाई- पहोलाई- जाडाई ---------- ३७
देवालयनी नन्दादि ८ शिलाओ ---------- ३७

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

शिलाओ उपरनां चिन्हो ---------- ३८
शिलाओंना नामोमां मतभेद ---------- ३८
उपशिलाओ ---------- ३९
निधिकलशोनी संख्या अने परिणाम ---------- ४०
निधिकलशोने अंगे शास्त्राधार ---------- ४१
७. वास्तुमर्मोपमर्मादि लक्षण ---------- ४२
शिराओ ---------- ४३
महावंशो ---------- ४३
वंशो अने अनुवंशो ---------- ४३
मर्म अने उपमर्म ---------- ४३
देवासनो, द्वारमध्यो अने पदमध्यो ---------- ४६
संधिओ ---------- ४७
ग्रन्थान्तरमां सन्धि अने मर्म ---------- ४७
मर्मोपमर्मादि चक्रम ६४ पदे ---------- ४९
मर्मोपमर्मादि चक्रम ८१ पदे ---------- ५१
वास्तुपुरुषनां अंग प्रत्यंगो ---------- ५२
वास्तुपुरुषना शयन प्रकारो ---------- ५२
८. वास्तुमण्डल विन्यास लक्षण ---------- ५८
प्रासादवास्तु मण्डल ---------- ५९
वास्तु मण्डल चक्रम ६४ पदे निर्वाणकलिकोक्त ---------- ६१
गृहवास्तु मण्डल ---------- ६१
वास्तुमण्डल चक्रम ८१ पदे- निर्वाणकलिकोक्त ---------- ६२
वास्तुंमण्डलचक्रम ६४ पदे- बृहत्संहितोक्त ---------- ६३
वास्तुमण्डल चक्रम ८१ पदे- बृहत्संहितोक्त ---------- ६४
वास्तुमण्डलचक्रम ८१ पदे- शिल्पशास्त्रोक्त ---------- ६५
९. प्रासाद लक्षण ---------- ६६
प्रासंगिकं ---------- ६६
प्रासादोत्पचित्तनो ईतिहास ---------- ६७
हस्तलक्षण ---------- ६९
मानपरिभाषा- कोष्टकम् ---------- ७२
वास्तुक्षेत्र विचार ---------- ७३
वास्तुपद देवता ---------- ७६
४९ पदात्मक मरीचिगणवास्तु (जीर्णोद्धारे) ---------- ७६
६४ पद भद्रक वास्तु- (नगर निवेशेपु) ---------- ७७
८१ पद कामद वास्तु (गृहादि निवेशे) ---------- ७७

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

१०० पद भद्रवास्तु (प्रासाद- मण्डपादिनिवेशे) ---------- ७८
वास्तुमर्मोपमर्म निर्णय ---------- ७८
वास्तुपरिभ्रमण ---------- ८२
वास्तुदोष ---------- ८४
आयाद्यङ्ग विचार ---------- ८७
वास्तु भूमि कोना हाथे मापवी ---------- ८८
आय लाववानी रीति अने नामादि ---------- ८८
देवालयोमां अने अधमालयोमां शुभ आय ---------- ८९
काल परक आयोनी श्रेष्ठता ---------- ८९
वर्ण विशेषने आय विशेषनी श्रेष्ठता ---------- ८९
आयोनुं फल ---------- ९०
कार्यविशेषे आय विशेषे ध्वज ---------- ९०
प्रतिनिधि आयो ---------- ९२
आयो ज्ञानार्थक कोष्टक ---------- ९४
नक्षत्र ---------- ९४
त्रिविध नक्षत्रगण ---------- ९५
अंगुलात्मक क्षेत्राद् नक्षत्र ज्ञानार्थक कोष्टक ---------- ९६-९७
राशि ---------- ९८
चातुर्वर्ण्य राशि ---------- ९८
राशिकूट ---------- ९९
चन्द्र ---------- १००
चन्द्रनो वासो जाणवानी रीति ---------- १००
व्यय ---------- १०१
आयस्थाने व्यय प्रदान कोष्टक ---------- १०५
अंशक ---------- १०५
अंशक प्रदान स्थान ---------- १०६
तारा ---------- १०७
अधिपति ---------- १०८
मतांतरे अधिपति ---------- १०९
प्रासाद अधिपति ज्ञानार्थक कोष्टक ---------- ११०
वास्तु जन्मतिथि ---------- ११०
शुभअंगोनी अधिकताथी वास्तुनी स्थिरता ---------- १११
केटलां अंगो शुभ होय तो सारां ---------- १११
वास्तुमां शुं शुं न लेवुं ---------- १११
वास्तुनुं जीवन अने विनाश ---------- ११२

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

प्रसादांग निरुपण --११२
जगतीनो आकार अने परिणाम --११३
ठककुर फेरुना मते जगतीनुं मान --११४
१०८ भागनो भंडोवरो--११५
जगतीनी उंचाईनो बीजो प्रकार---११५
खरशिला ---११५
मीट ---११७
पीठ ---११७
पीठनो उदय --११८
नवपीठोनां नामो अने अंगुलात्मक मान --१२०
लतिनादी ५ प्रासादोनां पीठोनो उदय ---१२१
पीठोदयानां भागो--१२१
अपराजितपृच्छामां निर्गमनुं प्रमाण---१२२
प्रासादनो उदय---१२२
पहेलो प्रकारनो उदय --१२२
बीजा प्रकारनो उदय---१२५
त्रीजा प्रकारनो उदय---१२७
चोथा प्रकारे प्रासादोदय ---१२८
पांचमा प्रकारे प्रासादोदय --१२८
छठ्ठा प्रकारनो प्रासादोदय- फेरु ठक्कुर मतमां--१२८
उदयमानमां मतभेद--१२९
मंडोवराना थरोनी भागसंख्या- प्रासादमण्डने---१३१
१०८ भागनो मंडोवरो---१३१
२७ भागनो मण्डोवरो- प्रासादमण्डनो ---१३२
ठक्कुर फेरुना मते २५ भागनो मंडोवरो--१३२
गर्भगृहोच्छ्रय अपराजितपृच्छायाम---१३३
गर्भगृहोच्छ्रय जाणवानी बीजी रीति --१३३
उंबरो- अपराजितपृच्छामां--१३४
अर्धचन्द्र- प्रासादमण्डनो ---१३६
नागरप्रासाद द्वारोदय- अपराजितपृच्छायाम ---१३६
क्षीरोर्णवनुं नागर द्वारमान ---१३७
भूमिज प्रासाद द्वारमान- अपराजितपृच्छायाम ---१३८
द्राविड द्वारमान- अपराजितपृच्छायाम --१३९
द्वारमानोनो उपयोग --१४०
द्वारशाखाओ --१४०

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

ए विषयमां पराजितपृच्छानुं निरुपण--१४१
अपराजितपृच्छामां शाखाओनी वर्तना --१४२
क्रिशाखानी वर्तना --१४२
पंचशाखानी वर्तना--१४४
सप्तशाखा द्वारनी वर्तना --१४५
द्वारशाखाना विस्तारनुं मान --१४५
उतरंग --१४६
जिनेन्द्रायतनना ८ प्रतिहारो--१४६
आयुधो --१४७
प्रतिमाओनां पदस्थानो--१४७
मण्डलोमां देवोना स्थानोनो अतिदेश--१४८
स्पष्टीकरण --१४८
अपराजितपृच्छानुं विधान--१४९
समरांगण सूत्रधारनां देवतापद स्थानो--१५०
उपरोक्त ग्रंथमां ए विषय बीजा प्रकारे --१५०
प्रासादमंडननां देवतापद स्थानो --१५०
आज काल प्रचलित देवता पद स्थानो--१५१
दृष्टिस्थान --१५१
ए विषयमां अपराजित ० नुं विधान--१५२
वाहनदृष्टि--१५३
ठक्कुर फेरुनुं दृष्टि विधान--१५३
आचार्य वसुनन्दिनी दृष्टिस्थान विषयक मान्यता --१५४
प्रणाल मूकवानी दिशा --१५५
प्रतिमामान द्वारोदय माने (उर्ध्वस्थिति)--१५६
उर्ध्वस्थित तथा आसीन--१५६
गर्भमाने प्रतिमामान --१५६
प्रासादमाने प्रतिमामान --१५७
शिखरश्रृग्डो अने उरुशृग्डो (प्रासादमण्डने)--१५७
रेखा अने रेखाना भेदो --१६०
कोलीना भेदो--१६३
चन्द्रकला रेखाओ--१६४
नागरी रेखाओ उदय रेखाओ --१६५
कला रेखाओ--१६६
कलारेखाओथी भेदातो स्कंध --१६७
२५ स्कंधोनां नाम--१६८

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अपराजितमां चन्द्रकला रेखाओनुं निरुपण ---१६९
१६ मूल चन्द्रकला रेखाओनां नाम ---१६९
चारविधि ---१७०
कलाविधि ---१७२
२५६ रेखाओनां नामो---१७३
१६ कलारेखाओ भेद खंडकला सहित ---१७७
त्रिखण्डाया १६ भेदा ---१७७
चतुष्खण्डायां १६ भेदा ---१७७
पञ्चखण्डाया १६ भेदा ---१७७
षटखण्डाया १६ भेदा ---१७८
सप्तमखण्डाया १६ रेखाभेदा ---१७८
अष्टमखण्डाया १६ रेखाभेदा ---१७८
नवखण्डाया १६ रेखाभेदा ---१७९
दशखण्डाया १६ रेखाभेदा ---१७९
एकादशाखण्डाया १६ रेखाभेदा---१८०
द्वादशा खण्डाया १६ रेखाभेदा---१८१
त्रयोदशखण्डाया १६ रेखाभेदा---१८२
चतुर्दशखण्डाया १६ रेखाभेदा ---१८३
पंचदश खण्डाया १६ रेखा भेदा---१८४
षोडश खण्डाया १६ भेदा कलासहिता ---१८५
सप्तदश खण्डाया १६ भेदा ---१८६
अष्टादश खण्डाया १६ रेखाभेदा कलासहिता ---१८७
आमलसारकना आकरो---१८८
आमलसारानी अंगविभक्ति ---१८९
प्रासाद- पुरुष- निवेशन ---१८९
कलश---१९१
प्रासादमाने कलशमान ---१९२
घराटादि प्रासादोनो कलश ---१९३
कलशनी अंगविभक्ति ---१९३
प्रकारान्तरे कलशना अंगविभागो---१९४
ध्वजदंड ---१९५
दण्डमान पहेला प्रकारनुं ---१९६
दण्डमान बीजा प्रकारनुं---१९६
दण्डमान त्रीजा प्रकारनुं---१९६
दण्डनी जाडाई ---१९७

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

दण्डनी पाटली -- १९७
पाटलीनुं स्वरुप -- १९८
दण्ड शानो बनाववो -- १९८
ध्वजानुं मान -- १९९
ध्वजावती (स्तंभिका) रोपण. -- १९९
जिनेन्द्र प्रासाद पंचक -- २००
तलविभक्ति २२ भाग -- २००
शिखरनी रचना -- २०१
केसरी आदि २५ नागरप्रासाद -- २०२
मण्डप -- २१२
शुकनासनी उंचाई -- २१४
स्पष्टीकरण -- २१८
पुष्पकादि २७ मण्डपो -- २१९
पुष्पकादि २७ मण्डपोना तलना नकशाओ -- २२६
द्वादशत्रिकमण्डपो नकशासहित -- २२९
स्तंभोना प्रकारो अने जाडाई -- २३१
प्रकारान्तरे स्तंभोनी जाडाई -- २३२
स्तंभनी जातिओ -- २३३
मण्डप भद्रविस्तार -- २३३
पाटस्तंभ अने शराना विस्तार -- २३४
द्वादशत्रिकम्डपोनुं शास्त्रीय निरुपण -- २३४
मण्डपाना सम्बन्धमां प्रकीर्णकवातो -- २३४
गूढ मण्डपनी भींत अने द्वार विषे -- २३६
बारी अने जाली -- २३७
परिच्छेदनो उपसंहार -- २३९
परिशिष्ट नं. ३ -- २४०
द्वारे दृष्टिस्थानज्ञापक काष्टकम -- २४१
परिशिष्ट नं. ४ -- २४२
२५ नागरी रेखाओ (खण्डकलासहित) -- २४३
१० कलश लक्षण -- २४४
आजकाल कलशमानमां चालती भूल -- २४५
कलशनी उंचाई -- २४५
एज ६ अंगानुं विस्तारमान -- २४६
११ ध्वजदण्ड लक्षण -- २४८
दण्डनी लम्बाईना प्रकारो -- २४८

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

दण्डनां उपादन काष्ठो --२५०
दण्डनी जाडाई --२५१
दण्डनी पाटली --२५१
ध्वजा परिमाण --२५३
१२ जिनप्रतिमा लक्षण--२५४
प्रतिमालक्षणनी दुर्बोधता--२५४
उर्ध्व स्थित प्रतिमानुं स्वरुप--२५७
आसनस्थित प्रतिमानी- चतुरता --२५८
जिनप्रतिमानी उंचाई नवतालनी--२५८
उभीप्रतिमामाननां ११ अंकस्थानो--२५९
आसनस्थप्रतिमानां अंगो तथा अंका--२६०
अंग प्रत्यंगना विभागे प्रतिमानो उदय --२६०
आसनस्थप्रतिमानो विस्तार विवेक --२६१
आसनस्थ प्रतिमानी जाडाई --२६३
प्रतिमामानांक कोष्ठक --२६४
कोष्ठकोना सम्बन्धमां कंईक स्पष्टता --२७६
प्रतिमामानांक परिशिष्ट--२८०
समरांगणसूत्रधारोक्त प्रतिमाना मानांक --२८०
अंगुली नखा --२८१
हीनाधिक मानन्नी प्रतिमा न करवी--२८१
भग्न प्रतिमाना संस्कार विषे--२८२
अलाक्षणिक प्रतिमाथी हानि--२८२
लक्षणहीन प्रतिमाना विषयमां समरांगणसूत्रधार--२८४
प्रतिष्ठाकल्पोक्त प्रतिमालक्षणहीनता--२८५
अलाक्षणिक प्रतिमा विषे वास्तुसारनुं विधान--२८६
शिल्प रत्नाकराक्त प्रतिमागत शुभाशुभ रेखाओ--२८७
प्रतिमा भंगनु फल --२८८
खंडितप्रतिमा विषे अपराजित० नुं मंतव्य--२८८
एज ग्रन्थना मते त्याज्य प्रतिमा--२८९
अपराजितनो ए विषयमां अपवाद--२८९
खंडितप्रतिमा सम्बन्धि ठक्कुर फेरुनी मान्यता --२९०
घर अने प्रासादमां स्थापनीय प्रतिमानुं मान --२९१
घरमां पूजवानी प्रतिमा विषेनो विवेक--२९१
प्रासादमानथी प्रतिमामान--२९१
प्रासादमां प्रतिमानुं स्थान --२९२

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

द्रष्टिस्थाननो विवेक ---------- २९२
उपसंहार ---------- २९३
१३ परिकरलक्षण ---------- २९४
वास्तुसारोक्त परिकर परिमाण ---------- ३०५
१४ जैन शासनदेव लक्षणम् ---------- ३०८
यक्षयक्षिणी कोष्टक निर्वाणकलिकाना आधारे ---------- ३१३
यक्षयक्षिणी कोष्टक शिल्पना आधारे ---------- ३२१
दशदिक्पाल यन्त्रकम् ---------- ३३०
नवग्रह यन्त्रकम् ---------- ३३१
षोडश विधादेवी लक्षणज्ञापकं यन्त्रम् ---------- ३३२
श्रुतदेवता- शान्तिदेवता- ब्रह्मशांति- क्षेत्रपाललक्षण ---------- ३३४
१५ धारणागति लक्षण ---------- ३३५
संज्ञाविवरण ---------- ३३७
जिननाम वर्ण लांछन नक्षत्र राशिओनुं कोष्टक ---------- ३४०
धारणागति कोष्टको ---------- ३४२
२४ तीर्थंकरोना नक्षात्रादि छअंगोनुं कोष्टक ---------- ३५०
१६ मुहूर्त लक्षणम् ---------- ३५२
मुहूर्तमान अने तेओनो कार्य प्रदेश ---------- ३५४
दिवस विभागनां शुभाशुभ मुहूर्तो ---------- ३५४
रात्रि विभागनां शुभाशुभ मुहूर्तो ---------- ३५५
वार परत्वे वर्जनीय मुहूर्तो ---------- ३५५
नक्षत्र स्वामिओनि क्रमिक नामावलि ---------- ३५७
वास्तु कर्ममां शुभ मुहूर्तो ---------- ३५८
मुहूर्तोना सम्बन्धमां लल्लाचार्यनो मत ---------- ३५८
मुहूर्त यंत्रकं ---------- ३५९
वर्षशुद्धि ---------- ३६२
अयनशुद्धि ---------- ३६२
मासशुद्धि ---------- ३६२
अधिकमास ---------- ३६३
क्षयमास ---------- ३६४
पक्षशुद्धि ---------- ३६५
गुरुशुक्रचन्द्रास्त शुद्धि ---------- ३६६
गुरुशुक्रना वाल्य ---------- ३६७
गुरुशुक्रस्तापवादे गर्ग ---------- ३६८
गुरु वक्रत्व दोष ---------- ३६८

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

वक्री ग्रह बलवान के निर्बल---३७०
नाग वास्तु चक्र मुज्जादित्यनिबन्धे---३७२
शिल्पाशास्त्रानुसारी शेषस्थिति चक्रम---३७४
अर्वाचीन ज्योतिष ग्रन्थानुसारी शेषस्थितिच---३७४
दिशाओमां खात करवानो प्राचीन क्रम---३७५
१ थी सात प्रकारना ऋषभवास्तुचक्रो---३७६
निशान्तचक्र---३८०
कूर्मचक्र---३८१
जल- कूर्मचक्र कोष्टक---३८२
गृहद्वारशाखा चक्र---३८२
प्राकार- देवतायतनद्वार वत्सचक्र---३८३
देवालयद्वारचक्र---३८४
वत्सने अंगे विशेष विधान---३८४
वत्सस्थितियन्त्रकम्---३८६
राहुनुं निरुपण चक्रसहित---३८७
स्तंभचक्र---३८८
भोमचक्र---३८९
आमलसारास्थापनचक्र---३८९
कलशचक्र १ थी ४ प्रकारनां---३९०
तिथि----३९३
तिथिविधेयक कार्यो---३९४
कुलोपकुल तिथिओ---३९९
तिथिवृद्धि तिथिक्षय---३९९
सूर्यदग्धा तिथिओ जाणवानो उपाय---४००
क्रुरग्रहाक्रान्तराशिस्वामिकतिथिओ---४०१
विषघटीका-तिथिविषघटी सयंत्रक---४०३
मासपरत्वे शून्यतिथिओ---४०४
क्षणतिथि---४०४
तिथिविषयक अपवाद---४०५
वार---४०७
वारप्रवृति जाणवानुं प्रयोजन---४०९
वारभोग सम्बन्धि एक नवी परम्परा---४०९
ग्रहोनो स्वाभाव प्रकृति---४११
ग्रहोनुं वर्णाधिपत्य---४११
वारविधेय कार्यो---४११

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

वारदोषो --४१४
वारदोषविषयक मतभेद --४१६
प्राचीनसंहितोक्त वारदोषज्ञापकयन्त्रकम् ---४१९
वारदोषोनी दिवसे प्रबलता ---४२०
वारदोषोनो परिहार ---४२१
वारगत शुभसमय --४२२
नव्यमतानुसारी मुहूर्तचिन्तामण्युक्त वारदोषज्ञापक यन्त्रकम् -------------------------------------४२३
आधुनिक चोघडियां क्यांथी आव्यां ---४२३
नक्षत्र -नक्षत्रोना अक्षरो --४२६
नक्षत्रोना स्वामिओ ---४२७
नक्षत्रतारसंख्या ---४२८
नक्षत्रमुहूर्तो---४२९
पूर्वयोगी आदि नक्षत्रो ---४२९
नक्षत्रोना भ्रमण मार्ग --४२९
मुखपरक नक्षत्रगणो अने विधेयकार्यो ---४३०
स्थिरादि नक्षत्रगणो अने विहित कार्यो ---४३१
प्रत्येकनक्षत्रविधेय कार्यो ---४३४
नक्षत्रोनी कुलादि संज्ञा ---४३८
नक्षत्रोनी अन्धादि संज्ञा ---४३९
नक्षत्रोना देव- मानवादि गण--४४०
नक्षत्रयोनि---४४०
नक्षत्रनाडी --४४१
नाडीदोषापवाद ---४४३
नक्षत्रोनी राशिओ ---४४३
शूलनक्षत्रो --४४४
सर्वद्वारिक नक्षत्रो --४४४
समय विशेष गमनाड्योग नक्षत्रो --४४४
सर्वकालेगमनयोग्य नक्षत्रो---४४५
पुष्यनी विशिष्टता--४४५
ज्योतिषतत्वकार पुण्यने अंगे कहे छे --४४६
वशिष्ट पुष्यने अंगे यात्रा विषे कहे छे. ---४४६
नक्षत्र पचक---४४६
व्यवहारमां पंचकनुं फल --४४८
आरंभसिद्धिमां पंचक विषे मतान्तर ---४४८
नक्षत्रविषघटी- वशिष्ट ---४४९

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

ज्योतिः सागरमां विषघटीनुं फल --४५०
विषघटी दोषापवाद --४५०
दूषित नक्षत्रो--४५१
कश्यपना मते पीडित नक्षत्रो---४५२
दूषितनक्षत्र वा पीडितनक्षत्रनी शुद्धि --४५३
पीडित नक्षत्रापवाद --४५५
ग्रहण तथा उत्पात दूषित नक्षत्रनी शुद्धि---४५६
नक्षत्रसंधि अने नक्षत्रगण्डान्त---४५७
नक्षत्रयोग, तिथिसंधिविषे---४५९
भसंधि- भगंडान्तुनुं फल---४५९
गंडान्तदोषनो परिहार ---४६०
उपग्रह ---४६०
उपग्रहोनो विषय अने फल ---४६२
उपग्रहोनो परिहार ---४६४
नक्षत्र- ग्रहकूट --४६५
लत्तादोष --४६७
शुभाशुभलत्तानां फल--४६९
लत्तानो परिहार---४७०
पातदोष--४७०
पातनो अपवाद ---४७१
सप्तशलकाचक्र---४७२
पंचशलका वेधचक्र---४७४
वेधफलम --४७५
वेधनो अपवाद --४७६
एकार्गलयोग दोष---४७७
एकार्गलयोगनुं फल--४८०
दशयोग दोष --४८१
दशयोगनुं फल--४८१
दशयोगनो परिहार---४८२
महापातनुं स्पष्टीकरण--४८३
वज्रपंचक --४८६
वाणपंचक ---४८७
वाणनो परिहार --४८९
नाग अने मृत्युवाणनो परिहार --४८९
योगो---४९०

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

विष्कंभादियोगानयनोपाय -- ४९०
विष्कंभादि २७ योगो --- ४९१
अशुभयोगोनी वर्ज्य घडिओ --- ४९२
योगेश --- ४९२
विष्कंभादि विधेय कार्यो --- ४९३
क्षणयोगो --- ४९७
आनंदादि २८ उप- योगो --- ४९८
आनंदादि योगो जाणवानो उपाय -- ४९८
आनंदादि अशुभयोगोनी वर्ज्यघडी --- ४९९
अशुभयोगोनो परिहार -- ४९९
प्रकीर्ण शुभयोगो- रवियोग --- ५००
रवियोग फल -- ५००
कुमारयोग- कुमारयोग फल --- ५००-५०१
राजयोग- राजयोग फल --- ५०१-५०२
अमृतसिद्धियोग- अमृतसिद्धिनुं बल -- ५०२
सिद्धियोग- स्थिरयोग --- ५०३
स्थिरयोगनो विषय -- ५०३
प्रकीर्ण अशुभयोगो -- ५०४
उत्पाच- मृत्यु- काणयोगो --- ५०४
यमघंटयोग- वज्रमुशलयोग- क्रकच योग -- ५०५
वज्रपातयोग --- ५०६
संवर्तकयोग --- ५०६
कालमुखी तिथि --- ५०६
ज्वालामुखी तथा दग्धयोग -- ५०६
शुभय़ोग कोष्टक- अशुभयोग कोष्टक -- ५०७-५०८
अशुभयोगनो परिहार -- ५०८
शुभयोगा --- ५०९
तिथि- नक्षत्रजन्य शुभयोग --- ५०९
वार–नक्षत्रजन्य शुभयोग --- ५११
तिथिवारजन्य शुभयोग --- ५१२
तिथिनक्षत्रजन्य शुभयोगकोष्ठक --- ५१३
वारनक्षत्रजन्य शुभयोगकोष्ठक -- ५१३
तिथि- वारजन्य शुभयोगकोष्ठक -- ५१४
ग्रहकृत शुभयोग --- ५१४
वारनक्षत्रजन्य अशुभयोग --- ५१६

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तिथि वार नक्षत्रजन्य अशुभयोग ---५१७
तिथिवारजन्य अशुभयोग ---५१८
ग्रहजन्मनक्षत्र अशुभयोग ---५१८
अचिकित्स्य गदयोग ---५१९
ग्रहकृत मृत्युयोग---५१९
अग्निजिह- विष- महाशूलयोगा ---५२०
अशनियोग ---५२१
हालहलयोग ---५२१
नक्षत्रलाच्छितयोग तिथिनक्षत्रोत्थ---५२१
वारनक्षत्रसमुत्थ अशुभयोग ---५२२
दिवा मृत्युदायक तथा रोगदायक नक्षत्र चरणो---५२५
वारनक्षत्रजन्य अशुभयोग कोष्ठक ---५२६
तिथि वार नक्षत्रजन्य अशुभयोग कोष्ठक---५२६
तिथिवारजन्य अशुभयोग ---५२६
तिथिवारजन्य अशुभयोग ---५२७
अशनियोग ---५२७
वार- तिथि- नक्षत्र हालहलयोगा ---५२७
नक्षत्रलाच्छित योग ---५२७
वार- नक्षत्रसमुत्थ असुभयोग---५२८
प्रकारान्तरेण वार- नक्षत्र समुत्थ अशुभयोग---५२८
गुणापवाद ---५२९
दोषापवाद ---५३१
करण ---५३५
करणसंबन्धी निरुपण---५३५
करणेश ---५३६
करणविधेयकार्यो---५३७
भद्राना अंगविभांगो---५३८
भद्राना तिथि संबन्धिषे आरंभसिद्धि ---५३९
दिशाकालपरत्वे भद्रानुं संमुख ---५३९
तिथिपरत्वे भद्राना पुच्छभागनो समय ---५४०
भद्राना पुच्छनुं महत्व---५४१
भद्रामां सिद्ध थयेल कार्य अंते नाश पामे छे ---५४१
भद्रामां करवानां कार्यो ---५४१
भद्राना परिहारना अनेक प्रकारो---५४१
कालपरक भद्रानां वे स्वरुपो---५४२

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

करणो विषे आरंभसिद्धिकारनो उपसंहार--५४२
लग्नबल प्रकरण--५४३
लग्नविधेयेकार्यो --५४३
लग्नप्रकृति--५४५
लग्नराशिपतिओ--५४६
राशिपतिओना शत्रुओ अने मित्रो--५४६
अतिवैर तथा अतिमैत्री--५४७
ग्रहोनी निसर्गमैत्री- मध्यस्थ- शत्रुताज्ञापक कोष्ठक--५४८
ग्रहमैत्री- शत्रुता विषयक प्राचीन मत--५४८
प्राचीन मतानुसारि मैत्री शात्रवकोष्ठक--५४८
ग्रहोनी दृष्टिमर्यादा--५४९
ताजिकोक्ता ग्रहदृष्टि--५४९
ग्रहोनुं बलाबल--५५०
चन्द्रबलनी श्रेष्ठता --५५१
लग्नषड्वर्ग--५५२
षडवर्गमां नवमांशनी विशिष्टता--५५२
लग्नबल--५५३
लग्नबलनो सारांश--५५५
उदयास्तशुद्धि --५५५
उदयास्त शुद्धौ आरंभसिद्धि --५५६
उदयास्त शुद्धि विषे व्यवहारप्रकाश--५५६
निर्बल अने त्याज्य लग्न--५५७
क्या ग्रहो क्या स्थानोमां न जोईए--५५९
क्रूरकर्तरा दोष--५५९
क्रूरकतेरीस्थित लग्न तथा चन्द्र अने ऐनो परिहार--५६०
सापवाद क्रूरयुति --५६१
जामित्र नामक लग्नदोष--५६२
शुभग्रहकृत लग्नगत दोषभंग --५६३
चंद्रतारा बल --५६४
चंद्रबल ताराबलनो समयविभाग --५६७
अशुभतारानो परिहार--५६८
दुष्टताराना अपवाद--५६८
घातचंद्र ए शुं छे. --५६९
प्रासाददि वास्तु मुहूर्तो--५७३
गुहारंभ मुहूर्त --५७३

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

भूम्यारंभ मुहूर्त ---५७४
वास्त्वारंभना सौरमासौ---५७४
गृहनिर्माणना महीना ---५७५
गृहनिर्माणमां सौरमासो ---५७५
वास्त्वारंभना नक्षत्रो---५७५
देवालयआरंभमां मासोंनो अतिदेश --५७६
गृहारंभना वारो --५७६
गृहारंभनी तिथिओ --५७६
तिथिवारने अंगे भृगुनो मत --५७६
दिनशुद्धि---५७६
गृहनिर्माणमां चन्द्रनी दिशा ---५७७
चंद्रदिशानुं फल --५७८
ऋक्षोच्चये गृहारंभ नक्षत्रो --५७८
भूमिशयन ---५७८
गृहारंभमां पंचांगशुद्धि --५७९
वास्तुनिर्माणनां लग्न ---५८०
वास्तुकार्योरंभनी उत्तम लग्नकुंडली ---५८१
गृहारंभलग्ने आयुर्दायकयोग---५८१
गृहारंभमां उत्तम- मध्यम अधमग्रहस्थिति ---५८३
गृह अने देवालयना निर्माणमुहूर्तो भेद नथी--५८४
कूर्मन्यास मुहूर्त ---५८४
सूत्रपात- शिलान्यास- खुरानां मुहूर्तो---५८५
द्वारारोपण मुहूर्त ---५८६
स्तभोच्छ्राय मुहूर्त --५८६
पट्कारोपण मुहूर्त --५८७
पज्ञशिला- शुकनास- पुरुषनिवेसन- मुहूर्तो --५८७
आमलसारकस्थापन मुहूर्त ---५८७
कलश अने ध्वजारोपना मुहूर्तो--५८८
प्रतिष्ठामुहूर्त- पंचांगशुद्धि --५८९
तिथिविषे नारदमत--५९०
प्रतिष्ठामां वार- नारदसंहिता ---५९१
प्रतिष्ठामां वारफल --५९१
प्रतिष्ठामां नक्षत्र--५९१
जैनप्रतिष्ठामां नक्षत्रो, आरंभसिद्धौ --५९२
प्रतिष्ठायां वर्जितनक्षत्रो --५९२

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

प्रतिष्ठामां योगो- वसिष्ठ --५९२
प्रतिष्ठामां करणो- आरंभसिद्धिना मते--५९३
प्रतिष्ठामां लग्नशुद्धि ---५९४
प्रतिष्ठाना लग्नने अंगे वशिष्ठ कहे छे---५९४
प्रतिष्ठानी लग्नशुद्धि विषे नारदजी --५९५
प्रतिष्ठामां लग्नव्यवस्था आरंभसिद्धौ ---५९५
लग्नकुण्डलीमां ग्रहव्यवस्था नारदमते---५९६
प्रतिष्ठालग्ननी ग्रहव्यवस्था आरंभसिद्धिना मते --५९७
प्रतिष्ठालग्नग्रहस्थिति फल- पूर्णभद्रमते --५९९
लग्नकुंडली ग्रहस्थिति कोष्ठको ---६०२
लग्नमां उत्तम- मध्यम नवमांशा---६०२
लग्नमां शुभनवमांशकोष्ठक --६०४-६०५
प्रतिष्ठादि लग्नगत दोषभंग---६०६
१७. मुद्राओनुं महत्व--६०८
मुद्राओनुं महत्त्व --६०८
मुद्रावस्तु तांत्रिकोनी छे. ---६०९
प्रतिष्ठोपयोगी मुद्राओ---६११

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org